29 जुलाई B.A. Part II संस्कृत (सम्मान) पृष्ठ सं० - 1

श्लोक सं० - 21

काश्यपः – (सनिःश्वासम्)

" शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम् ।
उटजद्वारविरूढं नीवारबलिं विलोकयतः ॥ "

संस्कृत - शब्दार्थ -

वत्से = हे पुत्रि = हे पुत्री । त्वया = शकुन्तलया = (शकुन्तला के द्वारा) तुम्हारे द्वारा । रचितपूर्वम् = प्रदत्तं प्राक् । (पहले पूजा के रूप में किए गए) उटजद्वारविरूढं = उटजस्य द्वारे उत्पन्नम् है कुटी के द्वार पर उत्पन्न (उगे हुए) । नीवारबलिं = वन्यधान्यस्य (जंगली धान का पूजा के रूप में उपहार) पूजोपहारम् । विलोकयतः = पश्यतः = देखते हुए ।
मम = कण्वस्य = कण्व का । शोकः = विषादः = दुःख ।
कथं नु = केन प्रकारेण = किस प्रकार ~~से~~ । शमम् = शान्तिम् = शांति को
एष्यति = प्राप्स्यति = प्राप्त करेगा ।

काश्यप ऋषि शकुन्तला के पतिगृहगमन के अवसर पर पुत्री के प्रति भावना (कथन) को अभिव्यक्त करते हैं –

" हे पुत्री, तेरे द्वारा पहले उपासना के रूप में किए गए तथा अब कुटिया के द्वार पर उत्पन्न जंगली धान का पूजा के रूप में उपहार को देखते हुए मेरा विषाद किस प्रकार से शान्त हो सकेगा ? "
अर्थात् नहीं शान्त हो पायेगा ?

व्याकरणस्य भागः

(क) रचितपूर्वम् = पूर्वं रचितम्, सुप्सुपा समास तथा भूतपूर्वे चरट् से पूर्व का बाद में प्रयोग।
अर्थ तेरे द्वारा (शकुन्तला द्वारा) पहले पूजा के रूप में प्रयुक्त किए गए ।

(ख) नीवार बलिम् = बलि शब्द बलिवैश्वदेव यज्ञ
= भूतयज्ञ के लिए डाले गए अन्न के लिए प्रयुक्त शब्द

अलङ्कार

(1) काव्यलिङ्गमलंकारः – इस अलङ्कार में वाक्य का अर्थ किसी हेतु (कारण) के रूप में अभिव्यक्त होता है। आपने ऐसा किया इसलिए ऐसा हुआ। अगर कहीं ऐसा कहा जाता है तो काव्यलिङ्ग अलङ्कार का आगमन होता है।

शकुन्तला द्वारा पहले पूजा के रूप में प्रयुक्त जिससे वर्तमान में कुटिया के द्वार पर उगे हुए जंगली धान को देखकर काश्यप ऋषि का विषाद (दुःख) शान्त नहीं हो पाता अर्थात् बढ़ जाता है। काश्यप ऋषि के दुःख का कारण शकुन्तला द्वारा पहले पूजा के रूप में प्रयुक्त तथा अब कुटी के द्वार पर उत्पन्न जंगली धान है। इसप्रकार यहाँ काव्यलिङ्ग अलंकार है।

आर्या जातिः

आर्या एक मात्रिक छन्द है। इसमें मात्राओं की गणना की जाती है। इसके प्रथम चरण में 12 मात्राएँ, दूसरे (चरण) में 18 मात्राएँ, तीसरे में 12 तथा चौथे चरण में 15 मात्राएँ होती हैं।

लक्षणः – "यस्याः पादे द्वादश मात्रास्तथा तृतीयेऽपि।
अष्टादश द्वितीये चतुर्थके पञ्चदश सार्या ॥"

कुछ मनीषी 'भूत्वा चिराय चतुरन्तमहीसपत्नी .....' (20वें श्लोक) के स्थान पर इसको चौथा प्रसिद्ध श्लोक मानते हैं।